किहदी करोगे

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

* * * * *

०१) नाम शब्द सच जग पूजा, हरि एका जणाईआ। भउ चुकाए एका दूजा, एका घर सुहाईआ। नेत्र खोल्हे नैण तीजा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चौथे घर इक्क वखाए सच दहिलीज़ा, मिले मेल हरि रघुराईआ। पंचम करे आपे रीझा, दर घर साचा बंक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दे शब्द चलाईआ। (६ ७८९)

* * * * *

०२) सतिगुर शब्द कहे कुछ वेला आउणा सख्त, सख्ती नाल समझाईआ। इक्क अकाल दा कायम रहणा तख्त, इट्टां पत्थरां वाला रहण कोई ना पाईआ। जिथ्थे माया दी करे कोई ना बचत, गोलकां सके ना कोई भराईआ। अक्खरां विच्च बणाए कोई ना बजट, हिंदसयां वंड ना कोई वंडाईआ। सतिगुरू घर विच्च कदे नहीं गिणी जाए अज्ज किन्नी होई वटत, माया नाल मायाधारी देणे रुढ़ाईआ। वेखो केहड़ा आउणा उह वक्त, वक्त वेला दए गवाहीआ। कोई कायम रहसी शख्स, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। एह खेल वरतौणा वाली अर्श, फर्शां ते पए दुहाईआ। नज़र औणा नहीं कोई चरच, चरागाह दिसे लुकाईआ। भगतां दा वंडे भगवान आप दर्द, दुखीआं दा दुःख गवाईआ। तुसीं बेनन्तीआं रोज़ करो ते सतिगुरू दी तुहाढ्ढे अग्गे इक्क अर्ज़, इक्को वार सुणाईआ। सारयां बोलणा ज़ोर नाल गरज, बिनां प्रभू तों सीस ना किसे झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ।

. . . गुर अवतार पैगम्बर कहण गोली गावे इक्क शब्द पुरख अकाल शब्द इक्क वडयाईआ। झगड़ा रहे कोई ना मज़हब, दीन दुनी ना वंड वंडाईआ। जन भगतो इक्क दूजे दा करना अदब, प्यार विच्च समझाईआ। जे तुसीं मेरे वल आउगे इक्क कदम, कोटां जन्मां दा लेखा दिआं मुकाईआ। तुसीं समझिओ ना एह काया बदन, तत्तां वाला जगत हंढाईआ। एस विच्च बह के पुरख अकाल करे अदल, इन्साफ आपणे हत्थ रखाईआ। एहो जामा गोबिन्द दा आया बदल, बदली करे जगत लोकाईआ। सतिगुर शब्द नूं कर सके कोई ना कतल, खण्डा खड़ग ना कोई उठाईआ। तुहानूं लै के जावां ओस वतन, जिथ्थे मिले बेपरवाहीआ। तुहाढ्ढा इक्को किनारा ते इक्को पतन, इक्को बेड़ा कंध उठाईआ। तुसां इक्क मन्नणा बचन, बिनां पुरख अकाल तों सीस ना किसे निवाईआ। जिथ्थे भगत भगवान वसण, उह दवारा तुहाढ्ढा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। (२७ पोह शै सं ५)

* * * * *

०३) ओए जन भगतो, बेड़ी कहे, मेरी मन्न लिओ अर्ज़, बेनन्ती कर के सीस निवाईआ। तुहानूं लोड़ नहीं रही जगत क्रिया दी, तुसां सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी इक्को गाउणी तर्ज़, तरीका प्रभ ने दित्ता समझाईआ। उह तुहाढ्ढा आपे वंड के दर्द, बेदरदी हो के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा परदा आप उठाईआ। (२७ पोह शै सं ७ रात नूं)

* * * * *

०४) नानक लेखा धुर दरबार, गुर गोबिन्द करे जैकार, सृष्ट सबाई लोकमात दे दात, कलिजुग अन्तम बाहर आप कढाइंदा। सति धर्म दी इक्क जमात, लेखा लिखे बिन शाही कलम दवात, धुर दा अंक आपणा आप प्रगटाइंदा। मिटे रैण अन्धेरी रात, सतिजुग साचे मिली दात, अठ्ठे पहर रहे प्रभास, आत्म परमात्म जुड़े नात, नाता बिधाता आप जुड़ाइंदा। गुर गोबिन्द वसे सभ दे साथ, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर शब्दी रूप पंज तत्त ना कोई रखाईआ। बिन पुरख अकाल कोई ना किसे टेके माथ, हरि सतिगुर निहकरमी निरगुण एका नज़री आईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला अन्तरजामी, जानणहारा वड वडयाईआ। अगम्म अथाह जिस दी बाणी, बाणी सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। सचखण्ड दी साची राणी, लोकमात दी इक्क निशानी, निशाना तीर इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। (१४-१७५)

* * * * *

०५) कलिजुग कहे ओ जेठ महीने साथी, मेरा संग निभाईआ। कुछ याद कर लै की कथा कहाणी गोबिन्द आखी, आखर गिआ दृढ़ाईआ। केहड़ी मंज़ल गुरसिख चढ़े अगम्म

घाटी, घाटा रहण कोई ना पाईआ । केहड़ा पैंडा मुक्के वाटी, राह विच्च ना कोई फिराईआ। कलिजुग कहे, गोबिन्द किहा, जे मंनिओ ते मन्नयो पुरख अबिनाशी, बिना पुरख अकाल दे सीस ना कोई निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो जनमिआ सो अन्त विनासी, विशिआं वाला रहण कोई ना पाईआ। चार युग दे शास्त्र ग्रन्थ एह निक्की पत्रका पाती, सुनेहड़े प्रभ दे रही सुणाईआ । जे कोई मन्नदा गोबिन्द दी आखी, इट्टां पत्थरां सीस ना कोई निवाईआ । तूं मेरा मैं तेरा आत्म समझदा ओस दी जाती, परमात्म विच्च समाईआ । झगढ़ा छुट्टदा तन ख़ाकी, उहला अवर रहे ना राईआ। जे कोई गोबिन्द दा जाम पींदा जिस नूं पिआउँदा बण के साकी, साख्यात नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दे लेखे पूर कराईआ। (२१ १५४)

* * * * *

०६) कलिजुग अन्त हो प्रगट, पारब्रह्म प्रभ भेव चुकाईआ। साचा मार्ग साहिब दस्स, दहि दिशा करे शनवाईआ। इक्को मन्नो पुरख समरथ, अकाल पुरख वड्डी वडयाईआ। नाता तोड़ो पंज तत्त, पंज तत्त गुरू ना कोई अखवाईआ। शब्द गुरू हर घट रिहा वस, घर खोजो सज्जण भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम हट्टी दए जणाईआ। नाम हट्ट काया अंदर, सो पुरख निरञ्जण आप टिकाइंदा। जन भगतो खोलो आपणा जंदर, कुंजी निरगुण आप प्रगटाइंदा। चढ़ के वेखो साचे मन्दर, सतिगुर साचा नज़री आइंदा । मन वासना बन्नो बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाइंदा। भाग लगाओ अन्धेरे खण्डर, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क उपाइंदा। (१४ २०३)

* * * * *

०७) गोबिन्द कहे प्रभू मैं नहीं तेरा मंगता, मंगण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं प्यार मंगया तेरीआं संगतां, नाता भगत नाल जुड़ाईआ। इन्हां दे अंदरों कढ़ दे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दे समझाईआ । उन्हां नूं कोई आस ना रहे स्वर्ग बहिश्त जन्नतां, जन्नत बहिश्त इन्हां दे चरनां हेठ देणे दबाईआ। तेरे दवारे रहे कोई ना भुक्खा नंगता, नाम भंडार देण भराईआ। तूं बोध अगाधा पंडता, बुद्धि तों परे देणा समझाईआ। जे पूजण ते इक्को करन तेरी मन्नता, जम्मण मरन वाले गुरू नूं सीस ना कोई निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा वेख वखाईआ। (२१ २०७)

* * * * *

०८) सतिगुर शब्द कहे केहदी करोगे पूजा, की सिल पूजस झट्ट लंघाईआ। की इष्ट मन्नोगे दूजा, पत्थरां सीस निवाईआ। की गुरू मन्नोगे पंज भूता, जो जम्मे अन्त मर जाईआ। की दीनां मज़हबां दीआं गलीआं वेखोगे कूचा, दर दर अलख जगाईआ। की सतिगुर जंगलीं लभ्भे ढूंडा, उच्चे टिल्लयां वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे जिंनां चिर प्रभ दा नाम किसे

ना बूझा, बुझा दीपक ना कोई जगाईआ। कँवल नाभ होए कदे ना मूधा, अमृत रस ना कोई झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। (२१ १०५३)

* * * * *

०६) कत्तक कहे मेरी नहीं काया, काया वालिओ दिआं जणाईआ। बिनां भगतां तों प्रभू किसे ना पाया, पाहन पूजण वाले प्रभ मिलण कोई ना पाईआ। जगत झूठी कूड़ी माया, ममता मोह हलकाईआ। धन्न भाग गुरमुखो तुहाढ्ढा वेला आया, वक्त वक्त नाल मिलाईआ। जिन्हां खुशीआं नाल पिछलिआं चौंह जुगाँ विच्च गाया, उहनां सहजे लिआ मिलाईआ। कूड़ी क्रिया विच्च ना कोई रुलाया, रुलदिआं गोद उठाईआ। इक्को बस्तर तन पहनाया, सोहणा रंग रंगाईआ। गरीब निमाणयां बण के दाई दाया, दायरे दीन दुनी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। साचे मार्ग साचे लाया, पन्थ मार्ग इक्क दरसाईआ। (२२ १११६)

* * * * *

१०) नबी कहे मेरा आ गिआ बेड़ा, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। एस नूं चप्पू लावे केहड़ा, क्यों गुर अवतार पैगम्बर चप्पा चप्पा ज़िमीं दे मालक दित्ते बणाईआ। उह तेरे नाम कलमे दीआं छेड़ के गए छेड़ां, छेकड़ तेरा अन्त कहण कोई ना पाईआ। कहन्दे गए धरनी धरत धवल दा खुल्हा वेहड़ा, उह धरनी जेहड़े तेरे चरनां दी धूढ़ बण के नौं खण्ड वंड वंडाईआ। ओ प्रभू तेरा किडा वड्डा जेरा, जेरज अंड विच्च वड़ के आपणा आप छुपाईआ। जिस नूं तूं भेजिआ उह सीने ते हत्थ मार के कहन्दा गिआ सभ कुछ मेरा, मुरीदो सिखो मैं ही तुहाढ्ढा पिता माईआ। उह पिता ना मन्नणा जो गुरू अवतार पैगम्बर अन्त हो गिआ ख़ाक दा ढेरा, तन वजूद वेख के सारे रोवण मारन धाहीआ। एसे कर के उह प्रगटया सिँघ शेर दलेरा, जिस शेर दे भय विच्च सारी फिरे लोकाईआ। एस दा हुक्म ते इक्को उखेड़ा, जड़्ह सभ दी दए उखड़ाईआ। प्यार मुहब्बत दा देवे गेड़ा, चुरासी चुराहिआं विच्च भवाईआ। सभ दे कोलों छिड़ाउँदा रिहा छेड़ां, छेकड़ आपणी कार भुगताईआ। हुक्म संदेशा देंदा रिहा बथेरा, बहु गिणत विच्च गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। (२७ पोह शै सं ७ रात)

* * * * *

११) नारद कहे मैं सच दस्सां जेहड़े प्रभू नूं नहीं जपदे, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। उन्हां दे लेखे अन्तम होणे कक्ख दे, कीमत जगत ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। (२४ माघ शै सं ७ पिण्ड सद्दा)

* * * * *

१२) शेर सिँघ ना कोई तन वजूद माटी ख़ाकी, भगवान भगत वेख वखाईआ। आदि अन्त दा बण के साकी, जाम प्याले रिहा पिआईआ। उहनूं की कोई समझावे बाती, अकल विच्च की दृढ़ाईआ। जिस ने चार जुग गुर अवतार पैगम्बरां तन दा बणा के साथी, फेर विछोड़ा दित्ता कराईआ। अगली खेल किसे समझ ना आई बाकी, परदा सके ना कोई उठाईआ। जिस वेले चाहे जिध्धर चाहे ओधर बणा लए आपणे साथी, अंदर वड़ के आपणा रंग रंगाईआ। क्यों एह खेल पुरख अबिनाशी, तत्तां वाला जीव समझ कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ।

भगत भगवान इक्को सेज, आत्म परमात्म सोभा पाईआ। जिथ्थे देवे जोती तेज, नूर जोत रुशनाईआ। शब्द संदेशा देवे भेज, अगम्म नाद सुणाईआ। उथे एह दो अक्खां ना सकण वेख, जिथ्थे बैठा आपणा रसीआ रस चखाईआ। पुज्ज ना सकण चार वेद, पुरान परदा ना कोई खुल्हाईआ। की होया जे दुनियां वाले दुनियां रहे वेख, दुनियां दी ममता विच्च दुनियां दी महिंमां विच्च आपणा आप गवाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जिस ने आपणी करनी अज्ज तक्क नहीं दित्ती किसे अग्गे बेच, वणजारा नज़र कोई ना आईआ। जद आया ते रक्ख के आपणी सेध, निशाने आपणे गिआ चलाईआ। पुरख अकाल सच्चा सतिगुरू नहीं कोई बक्करी भेड, वाड़े विच्च फड़ के जिथ्थे कोई चाहे ओथे बन्द कराईआ। एह ओस प्रभू दी खेड, जो जुग जुग आपणे हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद वसे आपणे अगम्मे देस, दिशा लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त सभ दी वेख वखाईआ। (५ कत्तक सै सं ५ वरकशाप विच)

* * * * *

१३) कत्तक कहे मैं वेख्या दीन दुनी दा कित्ता, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। साचा नज़र ना आया हित्ता, हितकारी रूप ना कोई दरसाईआ । माण हँकार विच वेख्या वड्डा निक्का, हउमे गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। अमृत रस ना मिल्या मिट्ठा, विख कूड़ भरी लोकाईआ। साचा दर किसे ना डिठा, धर्म दवार रहे कुरलाईआ। पुरख अकाल नूं छड्ड के सृष्टी मन्नदी पत्थर इट्टां, पाहनां सीस निवाईआ। अन्त सभ दा कागज कोरा ते लेखा चिट्टा, प्रभ दे लेखे विच्च कोई ना आईआ। सदी चौधवीं अन्त अखीर बेनज़ीर सभ दा कढ़ुणा सिट्टा, सिट्टेबाज़ी दा लहणा सभ दी झोली पाईआ। क्यों छब्बी पोह नूं गुर अवतार पैग़ंबरां दे जरम कर्म दा लै के औणा चिठ्ठा, दीन मज़हब दा लेखा देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा उहला दए उठाईआ। छब्बी पोह कहे कत्तक दस्स दे होर, अग्गे तो अग्गें ध्यान लगाईआ। कत्तक कहे मैं की दस्सां जिध्धर तक्कां सारे दिसण चोर, ठग्गी प्रभ दे नाल कमाईआ। रसना नाम जपदे अन्तर कठोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच्च हलकाईआ। सुरती शब्द सके ना कोई जोड़, आत्म परमात्म रंग ना कोई रंगाईआ। मन वासना काम कल्पणा स्त्री पुरुष की जगत वाली लोड़, लोड़ींदा साजण हत्थ किसे ना आईआ। कत्तक कहे सदी चौधवीं दे मनुशां नालों चंगे ढोर, जो खा पी के प्रभ दा शुकर मनाईआ। छब्बी पोह किहा दस्स होर, होर दे समझाईआ। कत्तक कहे जन

भगतां प्रभू जाणा बौहड़, बौहड़ गले लगाईआ। इक्को मंज़ल इक्को दवारा इक्को नाम लगा के पौड़, पारब्रह्म प्रभ आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। (१ कत्तक सै सं ५)

* * * * *

१४) माघ कहे मैं प्रभ दा हुक्म सुणना हो के मौजूद, जो मुफलिसां रिहा अपणाईआ। जुग जुग बदलदा गिआ अरूज, अर्श फर्श वेख वखाईआ। कलिजुग रहे ना अखीरी हदूद, हज़रत दए गवाहीआ । मनमत करनी नेसतो नाबूद, कूड़ी क्रिया देणी मिटाईआ। नानक गोबिन्द दे के गिआ सबूत, अक्खर अक्खरां वंड वंडाईआ। कोई खेल ना समझे पंज तत्त काया कलबूत, अन्तर अन्तर पड़दा कोई ना लाहीआ। अक्खरां विच्चों पत्थरां विच्चों सत्थरां विच्चों लभ्भदे महिबूब, जगत नेत्रां चार कुण्ट अक्ख उठाईआ। भेद समझ के एका दूज, दूआ एका जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। अन्तम सभ ने कर के जाणा कूच, कूचा गली रहण कोई ना पाईआ। बिन भगतां किसे नहीं औणी साची सूझ, समझ नाल रमज़ ना कोई मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाणा इक्क दृढ़ाईआ। (१३ १९०)

* * * * *

१५) धुर दा हुक्म कहे जो रिहा दस्सदा, दहि दिशा हुक्म सुणाईआ । जिस दवारे रिहा वसदा, सचखण्ड सोभा पाईआ। जिस प्रेमी नाल रिहा हस्सदा, प्रीतम तक्कया बेपरवाहीआ। जिस दा खेल वेख्या जुग चौकड़ी रस दा, रथवाही हो के सेव कमाईआ। सो वेस वटाए दया कमाए रूप प्रगटाए पुरख समरथ दा, समां समें विच्चों बदलाईआ। जो भगत सुहेले सद्दा, सन्तन रंग रंगाईआ। झगढ़ा मुका के शाहरग दा, शहनशाह आपणा घर दए समझाईआ। जिथ्थे इक्को दीपक जगदा, दिवस रैण होए रुशनाईआ। झगड़ा मुक जाए काअबे वाले हज्ज दा, शिवदवाला मन्दर मठ सीस ना कोई झुकाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण इक्को सजदा, सजदयां दा लेखा दए मुकाईआ। नूर नुराना हो के दगदा, दगेबाजी दए गवाईआ। जो सभ नूं घट घट भीतर हो के तक्कदा, बिनां अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। उह खेल करे जग सच दा, साचे दी साची सच वडयाईआ। सचखण्ड दवारा कहे मैं ओसे पुरख अकाल नाल वसदा, जो मेरे अंदर सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चरन दवारे सद्दा, हुक्मी हुक्म मनाईआ। कोई लेख ना जाणे अज्ज दा, कलकाती कर्म कांड ना कोई कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़रमाण आपणा रिहा सुणाईआ। (२४ माघ शै सं १)

* * * * *

१६) माघ कहे मैं अग्गा वेख्या हो के नेड़े, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ । सृष्टी विच्च पैण वाले झेड़े, झगड़ा होए लोकाईआ। प्रभू देण वाला उलटे गेड़े, लब्ब गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे भवाईआ। कूड़यां साधां दे रहणे नहीं डेरे, झूठा गुरू ना कोई अखवाईआ। सभ दे फड़ के डोबणे बेड़े, हुक्मे अंदर दए रुड़ाईआ। शब्दी हुक्म अंदर आ गए घेरे, अग्गे सके ना कोई छुडाईआ। धर्म राज दे अग्गे ढह ढह होणे ढेरे, डेरी अवर ना कोई लगाईआ। जे पुछे कोई केहड़े केहड़े, जो बिना पुरख अकाल दे इष्ट रहे मनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हुक्म दे के गए बथेरे, जुग चौकड़ी नित्त नवित्त फेरीआं पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग काया देणी बदलाईआ। (१९—१२१)

* * * * *

१७) छुरा कहे मेरा रूप तिखा, तिखी धार जणाईआ। जिस दा लेख परवरदिगार ने लिखा, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। जेहड़ा धर्म दी धार विच्च पूरा दिसे ना सिखा, सिख सतिगुर विच्च ना कोई समाईआ। उस दा सदी चौधवीं अन्तम निकले सिट्टा, सिट्टेबाजी ख़लक खुदाईआ। कीमत पैणी नहीं पत्थर इट्टां, मड़ी गोर रंग ना कोई रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। (२४ माघ शै सं ७)

* * * * *

१८) चेत कहे मैं वेख के होया आप हैरान, बिन हैरानीउँ हैरानी आईआ। धुर फ़रमाणा सुण के शब्दी समझे ना कोई बयान, विद्या विच्च जगत वडयाईआ। पैगम्बरां दी खुशीआं नाल पढ़न कलाम, परवरदिगार दा कलमा सुणन कोई ना आईआ। पत्थरां वाला तत्तां वाला पूजदे सारे राम, हर घट वस्सया राम ना कोई मनाईआ। गऊआं चरावण वाला बंसरी वजावण वाला सखीआं खेल खिलावण वाला मन्नदे काहन, धुर दा काहन जिस दा नज़र ना आए कोई निशान, घर घर बणया रहे महिमान, लक्ख चुरासी सुरती गोपी आदि जुगादि परनाईआ। साचा बेनज़ीर नज़र ना आए किसे अमाम, कलमयां विच्च सीस सर्ब झुकाईआ। वुज़ूआं विच्च करन इशनान, शरअ शरीअत होए वैरान, लाशरीक दरस कोई ना पाईआ। नानक सरगुण गौंदे गान, तत्तां वाला करन ध्यान, अक्खरां दा देण परमान, निरगुण जोत तक्के ना कोई भगवान, जो नानक नानक आपणे विच्च समाईआ। गोबिन्द गोबिन्द कह के थक्की ज़बान, बाहर दा वेख के चिल्ला कमान, बाज़ उडदा केहड़े असमान, नीला हिणके केहड़े दालान, सभ दा मालक श्री भगवान, वेख के सीस ना कोई निवाईआ। (१९ ३३०)

* * * * *

१९) राग छतीसा रहण ना पावणा, गुर नानक बणया इक्क लिखार। हरि का रूप प्रगट नज़री आवणा, सतिगुर पूरा किरपा करे आप निरँकार। तीर्थ तट्ट ना किसे नहावणा, अठसठ आप खुआर, गुरसिख तेरे चरन चुम्मे आण। मन्दर मस्जिद मठ शिवदवाले सीस ना किसे झुकावणा, काया मन्दर अंदर आपणे सच्चा गुरूदवार। घर राम रामा सीता सुरती आप परनावणा, साचा चिला खिचे धनुश बाण। काहना कृष्ना बंसरी इक्क वजावणा, राधा सुरती करे ध्यान। साचा स्वामी संग निभावणा, मेल मिलाए श्री भगवान। नाम सति सति नाम साचे घर बहावणा, नानक निरगुण मेला दो जहान। गुर गोबिन्द दरस गुरमुख विरले पावणा, कलिजुग जीव ना सके कोई पछाण। हउमे हंगता दुःख सर्ब कुरलावणा, उजल मुख ना कोई जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे आप तरावणा।

* * * * *

२०) कबीर राम किसे ना जाणिआ, रविआ अन्तर मीत। कबीर एका राम पछाणया, ना ठंडा ना सीत। कबीर एका रंग माणया, आदि जुगादी गाए एका गीत। आप सुणाए आपणी अकथ्थ कहाणीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे वस्त अनडीठ। लोगो राम पछाणो, कबीर कूके दए दुहाईआ। आपणे अंदर आपणा राम जाणो, बाहर लभ्भे ना किसे थाईआ। एका सतिगुर साचा चरन कँवल ध्यानो, धरत धवल दए वडयाईआ। गुर का शब्द मिले बबाणो, साचे राम लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कबीर दिता एका वर, एका राम राजा राम आप दरसाईआ। (०९ ६५०)

* * * * *

२१) दर घर साचे गावणा, हरि पातशाह सुल्तान। सति पुरख निरञ्जण इक्क मनावणा, अबिनाशी करता दो जहान। दूसर सीस ना किसे झुकावणा, अन्तम मिटे सर्ब निशान। पुरख अकाल एका नज़री आवणा, चार वरनां इक्क ज्ञान। एका इष्ट ध्यान लगावणा, साचा इष्ट श्री भगवान। पत्थर कागज़ किसे ना पार लँघावणा, गा गा थक्के वेद पुरान। अञ्जील कुरानां एह समझावणा, साचा नबी देवे सच्चा इक्क ईमान। अमाम अमामा आप अखवावणा, आपे मेटे पंज शैतान। दामनगीर दामन आप फड़ावणा, आप सुणाए अल्ला इक्क राम। दर दरवाज़ा इक्क खुल्हावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला साचे घर, पंचम मोह आप चुकावणा। (०९—४४७)

* * * * *

२२) चार वेद ब्रह्मे आई हार, थिर कोई रहण ना पाईआ। चारे बाणी करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। हरि का मन्दर अपर अपार, दिस किसे ना आईआ। लक्ख चुरासी

इट्टां पत्थरां अग्गे करे पुकार, निरगुण इष्ट ना कोई मनाईआ। ग्रन्थी पन्थी होए बेहाल, गोबिन्द नज़र किसे ना आईआ। चार यारी तेरा सज्जण सुहेला, इक्क इकल्ला माहीआ। मुहम्मद मंगया अन्तम वेला, एका मंग मंगाईआ। चौदां तबक होए वेहला, सदी चौधवीं नाल रलाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, अमाम अमामा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार चार आप सालाहीआ। चार सालाहे सलाहवण जोग, युगती आपणे हत्थ रखाईआ। (१० ७६४)

* * * * *

२३) सम्मत उन्नीसा नेड़े औणा, पान्धी पन्ध मुकाईआ। आपणा कीता आपे पौणा, दूसर भार ना कोई उठाईआ। जिस ने किहा मुहम्मद गौणा, तिस ज़हिमत दए वखाईआ। जिस ने किहा ईसा मूसा संग निभौणा, तिस हिस्सा रिहा मुकाईआ। जिस ने किहा कृष्न ध्यौणा, तिस त्रिलोकी गेड़ा गेड़े विच्च भवाईआ। जिस ने किहा राम दसरथ बेटा इक्क ध्यौणा, तिस जूनी जून भवाईआ। जिस ने किहा राम रमय्या एका पौणा, सो लक्ख चुरासी पार कराईआ। जिस ने किहा नानक गोबिन्द गुरू ध्यौणा, तिस देवे फड़ सज़ाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल इक्क मनौणा, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। सम्मत उन्नी नेड़े औणा, सभ नूं फड़ फड़ दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाणा आपणे हत्थ रखाईआ। (१० ८१५)

* * * * *

२४) हरि संगत जो कहणा कहे, गुर सतिगुर मंग मंगाइंदा। दर आया जो लहणा लैणा लए, अनमुलड़ी दात झोली पाइंदा। हरि सरनाई जिस बहिणा जाए बह, सच सिँघासण इक्क वखाइंदा। नाता तोड़े त्रैगुण त्रै, त्रैगुण अतीता आपणा रंग रंगाइंदा। लेखा चुक्के तूं मैं, पारब्रह्म प्रभ इक्को नज़री आइंदा। अमृत धार वहाए साची नैं, झिरना निझर इक्क झिराइंदा । मनमत मरो ना खह खह, गुरमत इक्को इक्क दृढ़ाइंदा। कलिजुग झूठा बुरज जाणा ढह, थिर नज़र कोई ना आइंदा। लक्ख चुरासी जाणा गह, बण किरसाणा आपणी कार कमाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल दी इक्को होणी जै, गोबिन्द सूरा फ़तहि डंका इक्क वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीसवीं सदी सभ नूं आप उठाइंदा।

* * * * *

२५) नानक सतिगुर कह के गिआ महांबली उतरे अवतार, मात पित ना कोई बणाईआ। मुहम्मद कह के गिआ आए अमाम यार, यारी यारां नाल निभाईआ। ईसा कहे मेरा पिता फेरा मारे परवरदिगार, बेपरवाह सच्चा शहनशाहीआ। मूसा कहे जिस दा जलवा तक्क के डिगा मूंह दे भार, अन्तम फड़ के बाहों लए उठाईआ। वेद व्यासा लिख के गिआ अपार,

पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चा टिल्ला परबत दए सुहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कहे मेरी किसे ना पाई सार, थोड़े थोड़े इशारे गिआ जणाईआ। कलिजुग अन्तम इक्क इकल्ला आवे आपणी वार, वारता सभ दी वेख वखाईआ। कागद कलम शाही ना लिखणहार, कातब रोवण ज़ारो ज़ार, तुआकब करे बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरी आदत दीन मज़हब ज़ात पात जुग चौकड़ी दित्ती वगाड़, मनमत कूड़ा राह चलाईआ । अग्गे इक्को इबादत दस्से हरि निरँकार, सख़ावत आपणी झोली पाईआ। उल्फ़त करे सर्ब संसार, ग़फ्लत कोई रहण ना पाईआ। महिफ़ल ला के गुर अवतार, पीर पैगम्बर नग़मा नाम सुणाईआ। इक्को शमा होए उजिआर, दीपक दीआ डगमगाईआ। दूसर कोई ना करे निमस्कार, बिन पुरख अकाल सीस ना कोई झुकाईआ। वाअदा कीता गुर अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाईआ। भरमे भुल्ले ना कोई संसार, भरम भुलेखे विच्च हरि जू कदे ना आईआ। लिखयां पढ़यां एह करनी विचार, बिन लेखा लिखयां नज़र किसे ना आईआ। हरि का लेखा सदा लिखण पढ़न तों बाहर, अलफ़ ये हद्द ना कोई वंडाईआ। निक्की निक्की पीर पैगम्बरां नाल करदा रिहा गुफ्तार, गुफ्त आपणा राह जणाईआ । जे कोई अगाँह हो के वेखे दिसे परवरदिगार, नूर नुराना नज़र किसे ना आईआ। इक्को सतिगुर नानक पुरख अबिनाशी आपणे चरन दए वखाल, सचखण्ड दुआरे दित्ती वडयाईआ। कबीर जुलाहे प्रीती बज्झी नाल, श्री भगवान आप निभाईआ। (१४ १८४)

* * * * *

२६) हुक्मे अंदर कोटन नाम, नाम नाम प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर इष्ट देव भगवान, विष्नूं बण बण सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर चतुरभुज हो प्रधान, हुक्मे अंदर आदि शक्त बणे माईआ। हुक्मे अंदर अष्टभुज हो बलवान, बल आपणा दए दरसाईआ। हुक्मे अंदर ओम ओम निशान, हुक्मे अंदर सोहँ धार चलाईआ। हुक्मे अंदर सय्या राम, हुक्मे अंदर कृष्न कृष्न वडयाईआ। हुक्मे अंदर सजदा सीस सलाम, हुक्मे अंदर सलामा अलैकम सिफ्त सलाहीआ। हुक्मे अंदर मंतर सतिनाम, सृष्ट सबाई दए जणाईआ। हुक्मे अंदर वाहिगुरू फ़तह डंका वज्जे विच्च जहान, दो जहानां आप जणाईआ। हुक्मे अंदर शास्त्र सिमरत वेद पुरान, जुग चौकड़ी देण गवाहीआ। हुक्मे अंदर वेद व्यासा लिख के लेख गिआ महान, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले परबत आपणा आसण लाईआ। हुक्मे अंदर मूसा दे के गिआ पैग़ाम, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। हुक्मे अंदर ईसा कहि के गिआ मेरा पिता अमाम, मेरे पिच्छे फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर मुहम्मद निउँ निउँ करदा गिआ सलाम, परवरदिगार ध्यान लगाईआ। हुक्मे अंदर चौदां तबक दे कलाम, कलमा बिन रसना जिह्वा गिआ पढ़ाईआ। हुक्मे अंदर नानक निरगुण साचा दस्स के गिआ निशान, महांबली उतरे वाहो दाहीआ। निहकलंक नौजवान, ना पिता ना माईआ। गोबिन्द कर के गिआ परवान, कल कलकी फेरा पाईआ। प्रगट होए मर्द मरदान, सच मरदानगी आप कमाईआ। इक्क उठाए धर्म निशान, दो जहानां दए भुलाईआ। राओ रंक सर्ब मिट जाण, ऊँच नीच रहण कोई ना पाईआ। सारे गाइण पुरख अकाल, इष्ट देव इक्को इक्क नज़री आईआ। सम्बल वसे धाम सच मकान, मन्दर इक्को

इक्क रुशनाईआ। जुग चौकड़ी लेखा चुकाए आण, नव नौं पैंडा दए मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, सिर सके ना कोई उठाईआ। त्रैगुण माया होए हैरान, पंज तत्त चले ना कोई चतुराईआ। बुद्धि देवे ना कोई ज्ञान, मत मतवाली नैण शरमाईआ। मन मनुआ ना नट्ठे शैतान, शरअ करे ना कोई लड़ाईआ। वेखणहारा दीन ईमान, इस्म आज़म इक्को इक्क दरसाईआ। मिहबान बीदो बी ख़ैर या इल्लाही हो प्रधान, नूर इल्लाही इक्क दरसाईआ। साहिब सतिगुर वड बलवान, शाह पातशाह फेरा पाईआ। चौदां लोकां ख़ाली करे दुकान, ख़ालक ख़लक वेखे थाउँ थाईंआ। चौदां रतन मिटे निशान, सोलां कलां ना कोई वडयाईआ । चौदां विद्या बणे नादान, लोक चले ना कोई चतुराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख वेख खुशी मनाण, प्रभ साचा संग रखाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त दो जहानां बदल दए नज़ाम, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लक्ख चुरासी नज़री आए इक्क भगवान, पंज तत्त गुरू ना कोई मनाईआ। हरि का शब्द होए बलवान, दो जहानां फिरे वाहो दाहीआ। राज राजान शाह सुलतान सीस सर्ब झुकाण, नैण सके ना कोई उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान जस सारे बह बह गाण, वाह वा वाह वा गुरू तेरी वडयाईआ। तेरा भेव ना पाए कोई विच्च जहान, महिमा सके ना कोई सुणाईआ। सचखण्ड निवासी तेरा खेल महान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तेरा लेख ना कोई लिखाईआ। कलम शाही काग़ज़ नेत्र रोण नीर बहाण, समुंदर सत्त मस दए दुहाईआ। बसुधा कहे मैं बाली नढ्ढी अंजाण, भार ज़रा ना सकां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी पार कराईआ।(१४—२१८ २१९)

२७) पुरख अबिनाशी हर घट वसे, घट घट रिहा समाईआ। इस दे कोलों कर के की कोई नस्से, भज्जयां राह कोई ना पाईआ। कूड़ी क्रिया अंदर सारे फसे, प्रभ भुल्लया बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग सिल पाथर पाणी मिटी कलम शाही टेकदे रहे मथ्थे, मस्तक हरि ना कोई निवाईआ। कलिजुग अन्तम मिलदे धक्के, धक्का श्री भगवान लगाईआ। शास्त्र वेद पुरान पढ़ पढ़ सारे अक्के, आख़र मेल ना कोई मिलाईआ। फिर फिर आए मदीने मक्के, मसला हल्ल ना कोई कराईआ। पुराणे चीथड़ सभ दे फटे, तन बस्तर रंग ना कोई रंगाईआ। अञ्जील कुरान खाणी बाणी दस्सदी रही पते, पतिपरमेश्वर गोद ना कोई बहाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेख लिखे, लिख लिख लेख जगत गए समझाईआ। पारब्रह्म प्रभ गुरमुख विरले आया हिस्से, जिस जन आपणा मेल मिलाईआ। बाकी इक्क दूजे नूं पुच्छण प्रभ जू वसे किथे, टिकाणा सके ना कोई जणाईआ। सारे खेल सुणन अनडिठे, वेखण नैण कोई ना पाईआ। सच दस्सण तों सारे फिके, कूड़ नाल जगत वडयाईआ। बाहरों बस्तर दिसण चिट्टे, अंदर दुरमत मैल भराईआ। माया ममता हट्ट विके, पंडत पांधे मुल्लां शेख़ ग्रन्थी पन्थी साचा संख ना कोई वजाईआ। प्रभ साचे दी कोई ना बहे छाती उप्पर हिक़े, गलवकड़ी कोई ना पाईआ। बिन गुरमुखां बाला कोई ना बणे निक्के, नन्नी नन्नी गुफ्तार ना कोई सुणाईआ। दीन मज़्हब ने सारे भिटे, बिन भगतां निर्मल रूप ना कोई

दरसाईआ। जल धारा गंगा बाहरों मारदे पाणी छिटे, संसा रोग अंदर ना कोई मुकाईआ। कूड़ी सेजा सारे लेटे, पलँघ रंगीन ना कोई वखाईआ। इक्क दूजे दा पिउ पुत्त बणदे रहे बेटे, आपणा पिउ नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण हो के वेखे, सचखण्ड बैठा बेपरवाहीआ। जिस दे हत्थ सर्ब दे लेखे, लेखे अंदर गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा लाईआ। कलिजुग अन्तम पा के बैठा आप भुलेखे, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। हरिजन विरला आ के पेखे, जिस अन्तर आपणी बूझ बुझाईआ। पूरब जन्म दे रक्खे चेते, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। (१४—५२६)

* * * * *

२८) . . . . . .प्रगट हो के विष्नूं भगवान, तूं मेरा मैं तेरा पिता पूत शब्दी ढोला दिआं सुणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेखां मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख प्रगटाईआ। साचा खण्डा तीर कमान, शब्दी चिल्ला इक्क उठाईआ। कूड़ कुड़िआरे मेटां शैतान, जेहड़े मेरे नाउँ नूं वट्टा रहे लगाईआ। मालक हो के हक़ मुकाम, घर घर करां सफाईआ। सभ दा बदल देणा निज़ाम, नौबत आपणा नाम वजाईआ। उलट पुलट करना एह मेरा खेल असान, सृष्ट सबाई दिआं भुआईआ। सूरबीर बण के चुस्त जवान, जोबन वेखां चाईं चाईंआ। नाम संदेशा दे के धुर फ़रमाण, सुनेहड़े सभ नूं दिआं घलाईआ। सोया रहे ना कोई अंञाण, बुध्धी बिबेक दिआं बणाईआ। जिन्हां पत्थरां इट्टां कागजां नूं मन्नयां भगवान, तिन्हां नूं बिनां शहादतां दिआं सजाईआ। जिस वेले मेरा पहला सम्मत चढ़या आण, पंचम जेठ खुशी मनाईआ। जगत कूड़ कुड़िआरे साधां सन्तां दे वेखां मकान, काया खेड़े फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क मनाईआ। (१८ ५७१)

* * * * *

२९) धुर दा हुक्म कहे जो रिहा दस्सदा, दह दिशा हुक्म सुणाईआ। जिस दवारे रिहा वसदा, सचखण्ड सोभा पाईआ। जिस प्रेमी नाल रिहा हस्सदा, प्रीतम तक्कया बेपरवाहीआ। जिस दा खेल वेख्या जुग चौकड़ी रस दा, रथवाही हो के सेव कमाईआ। सो वेस वटाए दया कमाए रूप प्रगटाए पुरख समरथ दा, समां समें विच्चों बदलाईआ। जो भगत सुहेले सद्दा, सन्तन रंग रंगाईआ। झगढ़ा मुका के शाहरग दा, शहनशाह आपणा घर दए समझाईआ। जिथ्थे इक्को दीपक जगदा, दिवस रैण होए रुशनाईआ। झगढ़ा मुक जाए काअबे वाले हज्ज दा, शिवदवाला मन्दर मठ सीस ना कोई झुकाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण इक्को सजदा, सजद्यां दा लेखा दए मुकाईआ। नूर नुराना हो के दगदा, दगेबाजी दए गवाईआ। जो सभ नूं घट घट भीतर हो के तक्कदा, बिनां अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। उह खेल करे जग सच दा, साचे दी साची सच वडयाईआ। सचखण्ड दवारा कहे मैं ओसे पुरख अकाल नाल वसदा, जो मेरे अंदर सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चरन दवारे सद्दा, हुक्मी हुक्म मनाईआ। कोई लेख ना जाणे अज्ज दा, कलकाती कर्म कांड ना कोई कटाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फुरमाण आपणा रिहा सुणाईआ। (२४ माघ शै सं १ १६ १८६)

* * * * *

३०) नूर दा रिहा ना कोई हुसीन, चम्म दृष्टी भरमी कूड़ लोकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सति संदेशा इक्क सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर दस मारो झाती, परदा अन्तर निरंतर खोल्ह खुल्हाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। आत्म ब्रह्म बणे कोई ना पाठी, पाठशाला रही कुरलाईआ। निरगुण धार दिसे कोई ना साथी, सरगुण पूजण चाईं चाईंआ। बिरहों तीर लगावे कोई ना काती, काया कूड़ विकार ना कोई मिटाईआ। अमृत किसे मिले ना बूंद सवांती, निझर झिरना ना कोई झिराईआ। झगड़ा वेखो जाती पाती, तुहाड्डी कीती सारे रहे उलटाईआ। पुरख अकाला लेखा मंगे बाकी, वही ख़ाता आपणा रिहा समझाईआ। ख़बर संदेशा देवे धुर दी कथा कहाणी साची, सुच्च संजम इक्क समझाईआ। आपणी आपणी खोल्ह के वेखो पाती, जो पत्रका दित्ती फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। (२१ ४४३)

* * * * *

३१) गोबिन्द कहे हुक्म चंगा कि फ़रमाण, मैनूं दिउ समझाईआ। सतिगुर शब्द चंगा कि तत्तां वाला इन्सान, केहड़ा सतिगुरू लउ मनाईआ। प्रभ दा दर्शन चंगा कि पढ़ना ज्ञान, अक्खरां नाल रखवाईआ। लैणीआं टक्करां प्रभ दे भेजे लभ्भणे कि मिलणा भगवान, एह वी देणा सुणाईआ। वस्त लैणी कि खोजणी दुकान, हट्टो हट्ट फोल फोलाईआ। मंज़ल लैणी कि बन्द करनी ज़बान, कन्ना विच्च उंगलां पा के अन्धेरे विच्च अन्धेरा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ।
(२० २१६)

* * * * *

३२) इक संदेशा देणा, रोटी कहे, जन भगतो अग्गे नूं कोई ना मन्नयो पत्थर इट्टां, बिनां प्रभू तों सीस ना कोई निवाईआ। तुहाड्डा नाता होया पक्का, लोकमात ना कोई तुड़ाईआ। जिस ने कूड़ी उठौणी सफा, मलेछ रहण कोई ना पाईआ। ओस दी किरपा प्यार मुहब्बत दा गफ्फा, विष्नूं दा विश्वास भण्डारा तुहाड्डे अंदर टिकाईआ। एथ्थे ओथ्थे दो जहान सदा तुहानूं नफा, घाटे विच्चों बाहर दित्ता कढ्ढाईआ । अज्ज तों तुहाड्डा सचखण्ड लिखया गिआ पटा, मोहर धुर दी नाम लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।(२१-१३१)

* * * * *

३३) कलिजुग कहे प्रभ वेख मेरा सफर, जल्दी जल्दी रिहा मुकाईआ। पैगम्बरां दे वेख कफ्ण, मुशर्द देण दुहाईआ। जेहड़े मकबरयां विच्च हो गए दफ्न, उन्नां दी लग्गी दफा कम्म किसे ना आईआ। जेहड़े आ के चले गए तेरे वतन, मुड़ के फेरा कोई ना पाईआ। उन्नां दी याद फज़ूल जगत वाला यतन, जेहड़े यतीम तेरे विच्च गए समाईआ। मैं चौहन्दा तेरा साचा इक्को होवे पतन, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। तूं आपे होवें पैज रक्खण, रक्खया करें थाउँ थाईंआ। जन भगत सुहेले रहे कोई ना सक्खण, खाली भंडारे दएं भराईआ। सच प्रीती जोड़ के नातन, नाता आपणे नाल रखाईआ। धुर संदेसा आवें दस्सण, नाम निधान इक्क जणाईआ। मेरा इक्को मन्न लै बचन, बच्चा हो के सीस निवाईआ। वेखीं चौधवीं सदी देवीं ना टप्पण, टप्पयां दा झगड़ा देणा मुकाईआ। अगनी जेठ वांग गुरमुख भगत कदे ना तपण, तपदे हिरदे शांत कराईआ। इक्को तेरा नाम जपण, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। सदा सरन सरनाई तेरी वसण, नाता तोड़ कूड़ कुड़ाईआ। पुरख अकाले तेरा प्यारा नाम जपण, जगजीवत रूप वटाईआ। सच दवार धुर दा लभ्भण, भज्जण वाहो दाहीआ। खुशीआं विच्च मिल के हस्सण, हस्ती हस्ती विच्चों बदलाईआ। धन्न भाग जे आइउँ पैज रक्खण, रक्खक हो के रक्खया करें थाउँ थाईंआ। पर मेरे अग्गे किसे दा चल्लया नहीं कोई यतन, जुगती कम्म कोई ना आईआ। मेरा खेल वेख चारों कुण्ट अन्धेरा कीता मस्सण, मस्ती सभ दी दित्ती गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। (२१ १५७)

* * * * *

३४) सत्त रंग कहण गुरमुखो जे नहीं करनी सच प्रीत, मैनूं दिउ जणाईआ। उह रहे ना संगत बीच, पल्लू जाए छुडाईआ। सोहँ रसन ना गाए सुहागी गीत, ढोला धुरदरगाहीआ। जिस नूं चाहीदी नहीं एह बख्शीश, उह मुखड़ा लउ भवाईआ। फिर वी जांदिआं दी देवे ठोक पीठ, शाबाश कह के दए सुणाईआ। तुहाढ्ढा निशान उकिआ ठीक, ठाकर नालों होई जुदाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पिच्छों पुरख अकाल नाल तुहाढ्ढी भुगतण आया तारीख, तवारीख पिछली दए बदलाईआ। अंदरों कर के ठंडे सीत, अगनी अग्ग दए बुझाईआ। कोई ना मंगे फीस, पूजा पाठ ना कोई कराईआ। जिस दा इक्क वेरां झुक जाए सीस, फड़ बाहों पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वसाईआ। (२१ २१४)

* * * * *

३५) चेत कहे वेखीं किते मैनूं साथ ना देवीं सतिगुर चम्म दा, चम्म दृष्टी दी लोड़ ना कोई रखाईआ। मैं उह सतिगुरू कदे नहीं मन्नदा, जेहड़ा माता दी कुक्खों जम्मदा, दस दस मास अगन विच्च रखाईआ। मेरा साथी उह होवे जेहड़ा लेखा जाणे इक्क गल्ल दा, जेहड़ी गल्ल नानक आपणे विच्च गिआ छुपाईआ। लक्ख चुरासी दा भार होवे झल्लदा, दीनां मज़हबां वंड ना कोई वंडाईआ। उह मालक होवे अस्गाह जल थल दा, टिल्ले परबत

खोज खुजाईआ। मैं जदों तक्कां उह आत्म परमात्म विच्च होवे रलदा, तन वजूद दा खैहड़ा दए चुकाईआ। ऊह वसनीक होवे निहचल धाम अट्टल दा, मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ गुरूदवारयां विच्च आपणा आप ना बन्द कराईआ। उहदा मसला होवे कलिजुग मसला हल्ल दा, हालत सभ दी दए बदलाईआ। उह समरथ होवे अकथ्थ होवे जन भगतां दे अंदर शब्द संदेशा होवे घल्लदा, अक्खरां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। (२२—६०० ६०१)

* * * * *

३६) पगड़ी कहे सुणो गुरमुख मीत, मित्रों दिआं जणाईआ। सतिगुर रक्खणा चीत, हिरदे विच्च वसाईआ। आत्म परमात्म गाउणा गीत, ढोला अगम्म अथाहीआ। कलिजुग विच्च सतिजुग बदलणी रीत, रीती धुर दी इक्क अपणाईआ। इक्क नूं झुके सीस, पगड़ी कहे एह सीस फिर झुकण किसे ना पाईआ। जीवण नालों मरना चंगा जेहड़ा मुख मोड़े जगदीस, जगदीशर प्रेम तुड़ाईआ। एहो हुक्म एहो प्यार एहो कलमा एहो हदीस, जेहड़ी हज़रतां तों परे दिती समझाईआ। तुसीं इक्क दे इक्क नाल करनी प्रीत, जो प्रीतम ना कोई मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी दया आप कमाईआ।

सीस कहे उह पगड़ीए आ जा मेरे उत्ते, लज्जया रक्खणी चाईं चाईंआ। मेरे भाग जाग पए सुत्ते, सुत्तयां लिआ उठाईआ। खुशी होई विच्च जुस्से, ज़मीर वज्जी वधाईआ। सीस कहे मैं सुगंध खावां दूसर अग्गे कदे ना झुक्के, जे लथ्थ जावे सी ना कदे सुणाईआ। अज्ज तों पिछले सभ दे पैंडे मुक्के, अवतार पैगम्बर गुरू दा नाता दिता तुड़ाईआ। भगत भगवान हो के उठे, लोकमात लई अंगढ़ाईआ। सतिगुर शब्द हो के तुठे, मेहर नज़र उठाईआ। सुहञ्जणी होई रुत्ते, प्रभ बख्शी माण वडयाईआ। जन्म कर्म दे मनाए रुस्से, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सार पुच्छे, दूसर हत्थ ना कुछ फड़ाईआ। (२२—६१०)

* * * * *

३७) नारद कहे खेल तक्क इक्क एकँकारी, अकल कलधारी रिहा जणाईआ। नेत्र तक्क शब्द लिखारी, पंज पंज पंज नाल वडयाईआ । ग्रंथ तक्क जिहनूं झुकणी सृष्टी सारी, सार शब्द नाल चतुराईआ। उह हाज़र होणे भगत दवार वड दरबारी, दर दरबारे सोभा पाईआ । फेर खेल वरते अपर अपारी, अपरम्पर स्वामी आप जणाईआ। सदी चौधवीं अग्गे कला वरतणी ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। (२२ ६७६)

* * * * *

३८) कत्तक कहे मेरी नहीं काया, काया वालयो दिआं जणाईआ । बिनां भगतां तों प्रभू किसे ना पाया, पाहन पूजन वाले प्रभ मिलण कोई ना पाईआ। जगत झूठी कूड़ी माया, ममता मोह हलकाईआ। धन्नभाग गुरमुखो तुहाढ़ा वेला आया, वक्त वक्त नाल मिलाईआ। जिन्हां खुशीआं नाल पिछलीआं चौंह जुगाँ विच्च गाया, उहनां सहजे लिआ मिलाईआ। कूड़ी क्रिया विच्च ना कोई रुलाया, रुलदिआं गोद उठाईआ। इक्को बस्तर तन पहनाया, सोहणा रंग रंगाईआ। गरीब निमाणयां बण के दाई दाया, दाइरे दीन दुनी विच्चों बाहर कढ़ाईआ। साचे मार्ग साचे लाया, पन्थ मार्ग इक्क दरसाईआ। कत्तक कहे जन भगतो तुहाढ़ा कर्म दा गेड़ कटाया, जो सतिगुर सरनी सीस निवाईआ। राए धर्म ना दए सजाया, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना लए परनाया, सतिगुर शब्द नाल कुड़माईआ। तुहानूं उस धाम वसाया, जिथ्थे जन्मे कोई ना माईआ । इक्को नूर जोत रुशनाया, जोती जोत विच्च मिलाईआ। सतिगुर कदे ना होए पराया, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे आपणा घर जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ। (२२ १११६)

* * * * *

३९) नारद कहे प्रभू मैनूं इउँ जापदा तेरे भगतां दे अंदर जगत वाला ज्ञान, ज्ञानी ध्यानी बण के जगत दी सुणन वडयाईआ। मैं चौहन्दा सारयां दा एको वार सच दी सभा विच्च हो जाए हलफीआ बयान, जिस दी हरफ हरूफ दे के परूफ पछतावा ना कोई जणाईआ। जो तेरा भगत हो गिआ उह बच्चा नहीं अन्जाण, बुद्धि तों परे उस दी पढ़ाईआ। जे उह भुल्ल जावे उहनूं बख्श लै आण , मेहर मेहर नज़र उठाईआ। आह वेख लै गुरू ग्रन्थ रमायण ते गीता नाल कुरान, इक्ठे हो के सारे देण गवाहीआ। जन भगतो जे तुहाढ़े कोल आ गिआ कूड़ कुड़िआरा ते शैतान, शरअ सच दी सच नालों तुड़ाईआ। फेर तुहानूं जरूर सतिगुरू दे हुक्म भुल्लयां चुरासी दा भुगतणा पए भुगतान, अग्गे हो ना कोई छुडाईआ। आपणे अन्तर निरंतर बिनां मुख तों बोलया ते दस्सया ज़बान, सारे प्रनाम कर के लउ कराईआ। एह जोती जगदी जगदी जगदी जिस तरां तुहाड़े साहमणे मिट गई विच्च जहान, एसे तरां फेर आत्मा हत्थ किसे ना आईआ । तुहानूं आपणी नहीं पहचान, बेपहचान तुहानूं पहचान के आपणे नाल मिलाईआ। तुहाढ़े दवारे दा उत्तम श्रेष्ट पीण खाण, जिस नूं अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव गुरू सारे खाण, आए चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। (२३—२८७)

* * * * *

४०) नारद कहे जन भगतो उह की तुसां सरीर नूं सतिगुर कहणा, जो जगत रहण ना पाईआ। उह की तुसां तत्तां दे कोल बहणा, तन वजूद वेखो चाईं चाईंआ। सभ नूं पता रहे एह काया दा बुरज़ जरूर ढहणा, जगत जहान नज़र कोई ना आईआ। सतिगुर शब्द शब्द शब्द सद रहणा, जिस नूं जन्मे जन्मे कोई ना माईआ। जिस नूं तुसीं वेख

नहीं सकदे नाल नैणां, उह बिन नैणां तों तुहानूं वेखे थाउँ थाईंआ। उह तुहाढ्ढा साहिब नहीं तरफैणा, त्रैगुण अतीता इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खलाईआ। (२३-१३४३)

* * * * *

४१) सतिगुर नानक जणाई इक्क गल, होर हउमे झक्खणा झाख। जो बावन दस्सी दवारे बल, बिन अक्खरां निरअक्खर धार आख। राम जणाई लंका धार विच्च जल, हनूवन्त समझाया साख। कृष्न भेव खुल्हाया पल, अरजन परदा लाह परताख। मूसा ओसे धार विच्च गिआ रल, जिस गल दी होर नहीं कोई शाख। ईसा ओसे मंज़ल पिआ चल, जेहड़ी गल अंदरों गई भाख। मुहम्मद उहो दवारा लिआ मल्ल, जिथ्थे इक्क गल दा यवले ज़ू जमता ज़वी अर्शे नविज़ योज़ू ज़मा रहमते खुदा नूरे निज़ा इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। . . . . . इक गल्ल सतिगुर नानक दी अञ्जण सुणी नाल प्यार, प्रीती विच्च समाईआ। अमरदास पाई सार, बिन सरवणां वज्जी वधाईआ। रामदास कीता ख़बरदार, राम रामा परदा आप उठाईआ। सतिगुर अरजन इक्क गल दा बण के लेख लिखार, गुरू ग्रंथ गुरदेव दिता बणाईआ। गुरू हरि गोबिन्द इक्क गल्ल सुण के हो त्यार, शस्त्र आपणे तन पहनाईआ। हरिराए गल्ल सुणी बिन रसना जिह्वा अन्तर आई धुनकार, जगत नादां बाहर वज्जी वधाईआ। हरिकृष्न सुण के अगम्मी गल्ल छड्ड गिआ संसार, बाल अवस्था इक्को गल्ल विच्च समाईआ। जिस गल्ल नाल गुर तेग बहादर आपणा सीस दिता वार, जगदीश नाल मिल के वज्जी वधाईआ। इक्क गल्ल दा गोबिन्द बणया पहरेदार, खण्डा आपणे हत्थ उठाईआ। इक्क गल्ल पिच्छे धर्म दी रखिआ कीती बण आप करतार, कुदरत दा कादर हो के वेख वखाईआ। इक्क गल्ल दा भेव खुल्हाया आपणे पंज प्यार, प्रेम प्रेम विच्चों जणाईआ। इक्क गल्ल सुण के पुरख अकाल, पन्थ खालसा दित्ता रचाईआ। सतिगुर दी इक्क गल्ल जे कोई मन्ने ना उह डुब्बे विच्च संसार, चुरासी विच्च कदे ना आईआ। उह इक्क गल्ल एह सदा सदा उस प्रभू नूं करो निमस्कार, डण्डावत विच्च ओसे नूं सीस निवाईआ। जिस दे जुग चौकड़ी अनेक अनन्त अगणत नाम कलम शाही कागज़ां नाल लिखे बण लिखार, कातब हो के कलम दिती चलाईआ। उस इक्क नाम तों आदि जुगादि जुग चौकड़ी कोई नहीं बाहर, जिस गल विच्चों दो जहान सतिगुर नानक धार दित्ते प्रगटाईआ। सो इक्क गल सिखां दे हिरदे अंदर गुर गोबिन्द रख के गिआ आप नाल प्यार, बंस सरबंस दीन दुनी विच्च जगत भेट कराईआ। अकसर अखीर कलिजुग दी धार विच्च उस गल नूं मन्नेगा सर्ब संसार, नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप ओसे गल्ल दी कीमत पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्ममादी जुग चौकड़ी खेल शब्द शब्द दी धार, सति सति दा सति आपणा खेल खिलाईआ। (२४ ७९५)

* * * * *

४२) कत्तक कहे मैं वेख्या दीन दुनी दा कित्ता, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ । साचा नज़र ना आया हित्ता, हितकारी रूप ना कोई दरसाईआ। माण हँकार विच वेख्या वड्डा निक्का, हउमे गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। अमृत रस ना मिल्या मिट्ठा, विख कूड़ भरी लोकाईआ। साचा दर किसे ना डिट्ठा, धर्म दवार रहे कुरलाईआ। पुरख अकाल नूं छड्ड के सृष्टी मन्नदी पत्थर इट्टां, पाहनां सीस निवाईआ। अन्त सभ दा कागज कोरा ते लेखा चिट्टा, प्रभ दे लेखे विच्च कोई ना आईआ। सदी चौधवीं अन्त अखीर बेनज़ीर सभ दा कढुणा सिट्टा, सिट्टेबाज़ी दा लहणा सभ दी झोली पाईआ। क्यों छब्बी पोह नूं गुर अवतार पग़ंबरां दे जरम कर्म दा लै के औणा चिठ्ठा, दीन मज़्हब दा लेखा देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा उहला दए उठाईआ। छब्बी पोह कहे कत्तक दस्स दे होर, अग्गे तो अग्गें ध्यान लगाईआ। कत्तक कहे मैं की दस्सां जिध्धर तक्कां सारे दिसण चोर, ठग्गी प्रभ दे नाल कमाईआ। रसना नाम जपदे अन्तर कठोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच्च हलकाईआ। सुरती शब्द सके ना कोई जोड़, आत्म परमात्म रंग ना कोई रंगाईआ। मन वासना काम कल्पणा स्त्री पुरुष की जगत वाली लोड़, लोड़ींदा साजण हत्थ किसे ना आईआ। कत्तक कहे सदी चौधवीं दे मनुषां नालों चंगे ढोर, जो खा पी के प्रभ दा शुकर मनाईआ। छब्बी पोह किहा दस्स होर, होर दे समझाईआ। कत्तक कहे जन भगतां प्रभू जाणा बौहड़, बौहड़ गले लगाईआ। इक्को मंज़ल इक्को दवारा इक्को नाम लगा के पौड़, पारब्रह्म प्रभ आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। (१ कत्तक सै सं ५)

* * * * *

४३) गुर अवतार पैगम्बर कहण तक्कया जगत जहान काया मन्दर, काअबा हुजरा साढ्ढे तिन्न हत्थ वेख वखाईआ। प्रकाश दिसे ना अन्धेरी कंदर, दीपक जोत ना कोई रुशनाईआ। मन कल्पणा नस्से वांग बन्दर, दह दिशा उठ उठ धाईआ। अन्तर खुल्ह के जंदर, सुरती शब्द ना कोई मिलाईआ। मानस जाति होई पशू ढोर डंगर, जो प्रभू नूं गए भुलाईआ। नौं दवारे मूल ना लँघण, सुखमन ईड़ा पिंगल पन्ध ना कोई चुकाईआ। हउमे हंगता ढाहे कोई ना कंधन, दूई द्वैत ना कोई मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए कोई ना छन्दन, आत्म परमात्म ना कोई सुणाईआ। इक्क पुरख अकाल नूं करे कोई ना बन्दन, मन्दर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरूदवारे सारे सीस निवाईआ। अबिनाशी करता लाए किसे ना अञ्जण, धर्म दी गोद ना कोई बहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक्को मंग मंगण, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। प्रभू डंका नाम वजा मरदंगण, सोई सृष्टी सुरत शब्द जगाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर ना देवीं लँघण, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। पिछली कीती करनी खण्डन, खड़ग खण्डा चण्ड प्रचण्ड नाम उठाईआ। तुध बिन कोई ना दस्से इक्को बंधन, बन्दगी डण्डावत सजदा इक्को देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। (२२-२६७)

* * * *

४४) गुर अवतार पैगम्बर कहण दीन दुनी दिसे निगुरी, सतिगुर इष्ट गए भुलाईआ। जगत कसाई बणी शरअ छुरी, शरीअत विच्च रगढ़ाईआ। सभ दी नीती हो गई बुरी, भैणां नूं तक्कण भाईआ। माण रिहा ना किसे धी कुड़ी, नार कन्त ना कोई सुहाईआ। तेरे नाल प्रभू प्रीती किसे ना जुड़ी, सारे सानूं मन्न के झट्ट लंघाईआ। तेरे प्यार दी मिली किसे ना पुड़ी, हउमे रोग ना कोई मुकाईआ। दीन दुनी जाए रुढ़ी, खेवट खेटा ना कोई सहाईआ। झूठे मार्ग जांदी टुरी, तुरीआ पद ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। (२१—६३५)

* * * * *

४५) सच संदेसा श्री भगवान, भगवन आप जणाईआ। दर औणा होए परवान, जो दर दरवाजे सीस झुकाईआ। लेखा पढ़े महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सजदा सीस झुक करे सलाम, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। दरवेश बरदा बणे गुलाम, गुरबत रहे ना राईआ। नेत्र नैण करे ध्यान, अक्ख पलक ना कोई वडयाईआ। नज़री आए श्री भगवान, बेनज़ीर सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा आप सुणाईआ। (१४-८५)

* * * * *

४६) चिढ़ी चिड़ा कहे ओए राम आ के दे दे शहादत, तेरी ओट तकाईआ। साड्डी लेखे लग्गी इबादत, पिछली तेरी वंड वंडाईआ। प्रभू नूं कहो आपणयां भगतां दी बदल दे आदत, बिनां प्रभू दे सीस ना किसे झुकाईआ। करदे सच सख़ावत, रहमत नाम वरताईआ । इक्क दूजे दी छड्ड देण अदावत, घर घर ना कोई लड़ाईआ। जे तूं लेखा बदल दिता बोदी जञ्जू हज़ामत, हुजरा इक्को इक्क वसाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अलामत, दुःख रोग रहे ना राईआ। तेरा नाम प्यारा इक्को इक्क नयामत, नर नरायण तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवारा इक्क सुहाईआ। (२१—१०२२)

* * * * *

४७) काया मन्दर सच दवारा, नानक वज्जी वधाईआ। रसना गाए नर निरँकारा, अजपा अजपा जाप कराईआ । उअँ सोहँ इक्क प्यारा, एका दूजा भउ चुकाईआ। मिले हरि कन्त प्यारा, नार सुहागण इक्क अखवाईआ। आपणी गोदी दए हुलारा, आप आपणे गले लगाईआ। आपे बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआईआ । अमृत आत्म ठंडी ठारा, गुर गोबिन्द झोली पाईआ। आपे बणया जग वरतारा, आपे मुख चुआईआ। आपे खोल्हणहार भंडारा, आपे बन्द कराईआ। जुग जुग खेले खेल विच्च संसारा, खेलणहार आप अखवाईआ।

आदि पुरख निरञ्जण अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर अलक्ख ना अलखिआ जाईआ। अगाध बोध शब्द जैकारा, हरि साचा आपणा लाईआ। वेद पुरान अञ्जील कुरान खाणी बाणी ना पावे सारा, हरि वड्डा वड वडयाईआ। आवे जावे विच्च संसारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर हरि खेल नयारा, कलिजुग बैठा मुख छुपाईआ। गुर गोबिन्दा बण लिखारा, हरि लेखा गिआ लिखाईआ। निहकलंक लए अवतारा, जोती शब्द कुड़माईआ। खोजे शब्द सो सिख हमारा, गुरू ग्रंथ देह बुझाईआ। मिले मेल नर निरँकारा, विछड़ कदे ना जाईआ। हरि का भेव खेल न्यारा, कोई भेव ना जाणे राईआ। अंदर मन्दर किसे ना पाया गुर शब्द दवारा, गुरूदवारे बैठे सीस झुकाईआ। नानक मिल्या ना मीत मुरारा, नानक नानक रहे गाईआ। गोबिन्द ना तोड़े गढ़ हँकारा, गातरे किरपान रहे लटकाईआ। चढ़या कोई ना महल्ल मुनारा, बाबे टल्ल पौड़ीआं लाईआ। साचा घाट जीव जंत तेरा नौं दवारा, कोई ना पार कराईआ। (६-८०१)

* * * * *

४८) लहणा देण लग्गा गोबिन्द दी कुरबानी, करबले वाले परे हटाईआ। सति दवारे खवाउण लग्गा महिमानी, नाम भंडारा इक्क वरताईआ। चार जुग दा झगडा मेटण लग्गा दीवानी, फैसला हक़ देवे सुणाईआ। जन भगतां दी आत्म रहे ना कोई बेगानी, बेवा रूप ना कोई वखाईआ। लहणा देणा चुकावे सुत भानी, अरजन अर्ज़ इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल ठाकर मेरे स्वामी, समां देणा बदलाईआ। गुरमुखां दी झोली पाउणी नेकनामी, निक्कयां तों वड्डे देणे बणाईआ। बेशक तेरी सृष्टी सदा फ़ानी, लासानी तेरी मेहर नज़री आईआ। साचिआं भगतां दी लेखे लाउणी लोकमात जवानी, जमां तों लैणा छुडाईआ। नाता जोड़ के सांझा बाहमी, इतमिनान देणा कराईआ। तेरा भगत प्रभू किसे दी कट्टे ना कदे गुलामी, दूसर सीस ना कोई झुकाईआ। तूं पुरख अकाल धुर दा अनामी, अनाम एहनां दी झोली देणा पाईआ। बिना गुरसिखां सतिगुर दी सारे करदे बदनामी, जो पढ़ के सुण के रस्ता जाण भुलाईआ। उह गुरमुख नहीं गुरू घर दे हरामी, नादी सुत ना कोई अखवाईआ। भावें पंडत होवे भावें होवे ज्ञानी, इशनानी सार कोई ना आईआ। भावें धोती बन्ने तहिमत भावें पावे पजामी, पैंट हैट कम्म किसे ना आईआ। तूं मालक खालक सभ दा अन्तरजामी, लक्ख चुरासी वेखें चाईं चाईंआ। कलिजुग अन्त अन्धेरी शामी, शमशान भूमी दिसे लोकाईआ। तूं प्रभू भगतां नूं मिलें नाल असानी, मिल के ऐहसान ना कोई चढ़ाईआ। क्यों एहनां गोबिन्द पिच्छे दित्ती कुरबानी, आप आपा वार वखाईआ। सेवा करी महानी, सीस जगदीश भेट कराईआ। झूजे विच्च मैदानी, मुद्दा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। (१९—१२६)

* * * * *

४९) गुर गोबिन्द किहा सच्च, सति सच दृढ़ाईआ। गुरू कदे ना बणे काया माटी कच्च, जो जम्मे ते मर जाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर जो हर हिरदे जाए रच, लूं लूं विच्च आपणा रंग रंगाईआ। सभ दी अंदरों बदल देवे मत, बुद्ध बिबेक दए वखाईआ । झगड़ा मुका के विकार तत्त, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। बहत्तर नाड़ ना उबले रत्त, तिन्न सौ सट्ठ हाडी दुक्खां विच्च ना कोई भवाईआ। एसे कर के गुरू ग्रंथ दी गाथा दित्ती दस्स, दहि दिशा दिता समझाईआ । एस तों पढ़यां सुणयां मार्ग मिलदा जिथ्थे मिले पुरख समरथ, ओस मंज़ल चढ़ के गुरमुखो दर्शन लैणा पाईआ। जे ऐवें खाली टेकी जाओ मथ्थ, मथ्थे टेकिआं हत्थ कुछ ना आईआ। जिनां चिर तुहाढ्ढे अंदर नानक गोबिन्द नाम ना जाए वस, वास्ता जगत नालों तुड़ाईआ। ओन्हां चिर खुल्हे ना अंदरों अक्ख, निझ नेत्र ना होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द दे के गिआ वर, गुरबाणी बिनां गुर शब्द बिनां गुर धार बिनां गुर प्यार बिनां पुरख अकाल नज़र किसे ना आईआ। (२४ अस्सू श सं ५)

* * * * *

५०) सतिगुर शब्द कहे ऐवें ना करयो हूं हूं, होके नाल सुणाईआ । जिन्हां चिर मैं विच्च ना मिले तूं तूं, मैं तूं विच्च समाईआ। तुहाढ्ढा खुशी ना होवे लूं लूं, घर वज्जे ना सच वधाईआ। ओन्हां चिर प्रभ दे दवारे दी कदे ना भुल्लयो जूह, अग्गे पिच्छे कदम ना कोई टिकाईआ। जे मथ्थे टेकणे ते कोटन कोट बाहर वेखयो गुरू, घर घर बैठे डेरे लाईआ। जे आत्म हो के परमात्म नाल जाउ छूह, फिर शर्म हया रहे ना राईआ। आपणे घर दी तुहान्हूं आपे दस्स दए सूह, इशारे नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी कार कमाईआ। (१९—९५)

* * * * *

५१) जोत निरञ्जण पूजण जोग। हउमे विचों कट्टे रोग। सोहँ देवे साचा योग। गुरमुख साचे प्रभ साचा, आत्म मिटावे चिन्ता सोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए लगाए भोग।

* * * * *

५२) प्रहिलाद कहे मैं कलिजुग वेख्या कूड़ा, प्रभू काहनूं दित्ता वखाईआ। मैं मंगण वाला तेरी चरन धूड़ा, बिन तेरे दरस कोई ना पाईआ। तूं मैनूं वखा दिता लोकी मन्नदे ऊड़ा ऐड़ा, अक्खरां पत्थरां सीस निवाईआ। पुरख अकाल तैनूं बणा के चूढ़ा, घर विच्चों सभ ने दित्ता कढ्ढाईआ। तेरा तक्क के खुश नहीं कोई नूरा, पढ़ पढ़ विद्या ढोले जगत सुणाईआ। इक्क रविदास वेख्या जो बैठा उप्पर टुट्टी फूड़ा, पानहां गंढ्ढ के खुशी मनाईआ। प्रहिलाद कहे मैं जां तक्कया माया राणी घर घर पा के रंगला चूड़ा, जोबनवन्ती भज्जे वाहो दाहीआ। साध

सन्त जिस दा होया वेख्या मशकूरा, शुकरीआ कर कर सीस निवाईआ। साचा रंग चढ़े किसे ना गूढ़ा, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। बिन कल्पना झूटदे सारे पंघूड़ा, आत्म सेज ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। (२१ चेत शै सं ४)

* * * * *
* * * * *

"जेहड़े आशक हो गए धुर दे रब्ब दे,
दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ ।
तूंही तूंही करके सददे,
अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ ।" (२१-४६६)

* * * * *
* * * * *